निजानंद स्वरूपम् शिवोऽहम्
ज्ञानस्वरूपम् शिवोऽहम्
प्रकाशस्वरूपम् शिवोऽहम्




परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

कलियुग के अंतिम समय में जब धर्म ग्लानि, अधर्म वृद्धि हो चुकी है तब पुनः सत्धर्म की स्थापना अधर्म का विनाश हेतु गीता भगवान निराकार शिव परमात्मा का प्रजापिता ब्रह्मा तन में दिव्य अवतरण 1937 में हो चुका है




शिव भगवानुवाच :-

मेरा नाम :- सदाशिव . मेरा रूप :- ज्योति स्वरूप . मेरे गुण : ज्ञानसागर पतित पावन
मेरा धाम : परमधाम वा शिवलोक . मेरा अवतरण समय :- कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग
मेरे कर्तव्य : ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना, विष्णु द्वारा स्वर्ग की पालना, शंकर द्वारा कलियुगी नर्क का विनाश

शिव का अर्थ है - 'कल्याणकारी । परमात्मा का यह नाम इसलिए है, वह धर्म-ग्लानि के समय जब सभी मनुष्यात्माएं माया (पांच विकारों) के कारण दुःखी, अशान्त, पतित एवं भ्रष्टाचारी बन जाती हैं तब उनको पुनः पावन तथा सम्पूर्ण सुखी बनाने का कल्याणकारी कर्तव्य करते हैं।

शिव ब्रह्मलोक में निवास करते हैं और संसार का उद्धार करने के लिए ब्रह्मलोक से नीचे उतरकर एक मनुष्य के शरीर का आधार लेते हैं। परमात्मा शिव के वृद्ध तन में अवतरण अथवा वे जो साधारण एवं वृद्ध मनुष्य के तन में अवतरित होते हैं, उसको वे परिवर्तन के बाद प्रजापिता ब्रह्मा नाम देते हैं। उन्हीं की याद में शिव की प्रतिमा के सामने उनका वाहन नंदीगण दिखाया जाता है। क्योंकि वे तो स्वयं ही सब के माता-पिता हैं, मनुष्य-सृष्टि के चेतन बीज रूप हैं और जन्म-मरण तथा कर्म-बन्धन से रहित हैं इसलिए वे किसी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते बल्कि ब्रह्मा के तन में परकाया प्रवेश ही उनका दिव्य जन्म अथवा अवतरण है।

परमात्मा शिव के इस अवतरण अथवा दिव्य एवं अलौकिक जन्म की पुनीत-स्मृति में ही शिवरात्रि अथवा शिवजयन्ती का त्यौहार मनाया जाता है।

द्वापरयुग और कलियुग के समय को 'रात्रि' कहा जाता है (ब्रह्मा की रात्रि)। रात्रि वास्तव में अज्ञान, तमोगुण अथवा पापाचार की निशानी है।

कलियुग के अंत में, जबकि साधु, संन्यासी, गुरु, आचार्य इत्यादि सभी मनुष्य पतित तथा दुःखी होते हैं, जब धर्म की ग्लानि होती है, जब सारी सृष्टि माया (अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि पाँच विकारों) के पंजों में फंस जाती है जब यह भारत विषय-विकारों के कारण वेश्यालय बन जाता है तब पतित पावन परमपिता परमात्मा शिव जो कि आवागमन के चक्कर से मुक्त हैं इस सृष्टि में दिव्य-जन्म लेते हैं तथा मनुष्यात्माओं को पवित्रता, सुख और शांति का वरदान देकर माया के पंजे से छुड़ाते हैं। वे ही सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते हैं तथा सभी आत्माओं को परमधाम में ले जाते हैं तथा मुक्ति एवं जीवनमुक्ति का वरदान देते हैं। इसलिए अन्य सबका जन्मोत्सव तो 'जन्मदिन' के रूप में मनाया जाता है परन्तु परमात्मा शिव के जन्मदिन को 'शिवरात्रि (BIRTH-NIGHT) ही कहा जाता है।

जब इसप्रकार अवतरित होकर ज्ञान-सूर्य परमपिता परमात्मा शिव ज्ञान-प्रकाश देते हैं तो कुछ ही समय में ज्ञान का प्रभाव सारे विश्व में फैल जाता है और कलियुग तथा तमोगुण के स्थान पर सतयुग और सतोगुण की स्थापना हो जाती है और अज्ञान-अन्धकार का तथा विकारों का विनाश हो जाता है और थोड़े ही समय में यह सृष्टि वेश्यालय से बदलकर शिवालय बन जाती है और नर को श्रीनारायण पद तथा नारी को श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति हो जाती है।

परमात्मा शिव अवतरित होकर अपने ज्ञान, योग तथा पवित्रता द्वारा आत्माओं में आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न करते हैं। इसी महत्व के फलस्वरूप भक्त लोग शिवरात्रि को जागरण करते हैं। इस दिन मनुष्य उपवास, व्रत आदि भी रखते हैं। उपवास (उप-निकट, वास-रहना) का वास्तविक अर्थ है - परमात्मा के समीप हो जाना। अब परमात्मा से मुक्त होने के लिए पवित्रता का व्रत लेना जरूरी है।

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग स्थापना

विष्णु द्वारा सतयुगी स्वर्ग की पालना

शंकर द्वारा कलियुगी नरक का विनाश

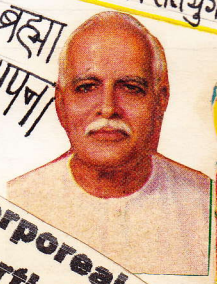

**Shiva, The Incorporeal God is known as Trimurti (त्रिमूर्ति) because he is the creator of the Divine Trio Brahma, Vishnu and Shankar**

**शिव** वह

जटाधारी, सर्पधारी,
चन्द्रधारी, व गंगाधारी
**शंकर नहीं** बल्कि उनके भी
रचयिता **ज्योतिबिन्दु निराकार** हैं।
'शिव' का एक शाब्दिक अर्थ 'बिन्दु' भी है
बिन्दु अर्थात् **अतिसूक्ष्म**....। जो अति सूक्ष्म
है, वही सर्वशक्तिवान भी है। उसी में सम्पूर्ण ज्ञान
भी समाया हुआ है **ज्योतिबिंदु परमात्मा का प्रतीक** शिवलिंग **है जबकि शंकर प्रकाशमय आकारी देवता हैं। शिव** योगेश्वर हैं - **शंकर** योगीमूर्त हैं। **शिव** रचयिता हैं। **शंकर** रचना हैं। **शिव** पिता हैं। **शंकर उनके** पुत्र हैं। परमात्मा शिव स्वयं इस धरा पर **प्रजापिता ब्रह्मा** के माध्यम से कर्म करते हैं.... वे **अकर्ता** नहीं, परन्तु उनके कर्म दिव्य हैं। यदि वे कुछ भी न करते तो उनका अस्तित्व ही क्या होता, उनका महत्व व उनकी महिमा ही क्यों होती ? उन्हें कोई क्यों पुकारते.

**क्या हैं उनका दिव्य कर्त्तव्य** : कर्त्तव्य तो मनुष्य, महान पुरुष और देवता भी करते हैं, परन्तु **भगवान जो दिव्य कर्त्तव्य करते हैं, ऐसा अन्य कोई नहीं कर सकता।**

उनके दिव्य कर्त्तव्य न केवल **स्थापना, पालना, विनाश** हैं. बल्कि वे आकर सभी को **संपूर्ण ज्ञान** देते हैं मन का **अंधकार** हरते हैं। विकारों और पापकर्मों पर विजय पाने के लिए **राजयोग** सिखाते हैं। और सभी को **संपूर्ण पावन** बनाकर वापस **मुक्तिधाम** ले जाते हैं। उनके कर्म दिव्य इसलिए भी है क्योंकि कर्म करते भी वे कर्म के **बन्धन** में नहीं आते। निष्कामभाव से कर्म करते हैं। देह में आते भी वे देह के बन्धन में नहीं आते अर्थात् वे प्रकृति को **अधीन** रखते हैं।

**विकारी, अपवित्र दुनिया** को **निर्विकारी पावन दुनिया** बनाना **वेश्यालय** को **सच्चा-सच्चा शिवालय** बनाना **कलियुग दुःखधाम** के बदले **सतयुग सुखधाम** को स्थापना करना केवल सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा **शिव** का ही कार्य है।

**अब कल्प के वर्तमान संगमयुग में अवतरित होकर फिर से वही कर्त्तव्य परमपिता परमात्मा शिव कर रहे हैं।** 81 वर्ष पूर्ण हो गये शिव को इस धरा पर **ज्ञान गंगा** बहाते, अनेक आत्माओं के पाप मिटाते। उन्होंने एक शक्तिशाली **अलौकिक सेना** (शिव-शक्तियाँ) तैयार कर दी है जो आने वाले थोड़े ही वर्षों में इस सृष्टि को **कायाकल्प** कर देगी।

**मृत्यु से कौन छुड़ा सकता है** : मृत्यु से वही छुड़ा सकता है जो **मृत्यु से भी बलवान्** अर्थात् **मृत्युंजय** हो। काल से भी वही बचा सकता है जो **काल का भी काल** हो। कर्मों के दण्ड व बन्धन से मुक्त वही कर सकता है, जो कर्मों की **गहन गति** को जानता हो और स्वयं इनके बंधन से **सदा मुक्त** हो। मनुष्य से देवता वही बना सकता है जो **देवों का भी देव** हो। अतः संसार में सहायता भले ही कोई मनुष्य दे सकता हो **मुक्ति और जीवन मुक्ति का दाता** एक परमपिता परमात्मा **शिव** को ही **मृत्युंजय अथवा अमरनाथ** भी कहा जाता है। वे इस धरा पर अवतरित होकर मनुष्य आत्माओं को **ज्ञानामृत** पिला रहे हैं जो पीने से **21 जन्मों तक हमें काल नहीं खा सकता। शिवरात्रि पर जागरण तो करते आये अब अन्तःकरण को जगाओ तो इन्तजार की घड़ियाँ पूर्ण हो जायेंगी। आप शिव पर जन्म-जन्म दूध व जल चढ़ाते आये, अब वह अमृत पिला रहा है, अमर देवता बनाने के लिए। अमृत अर्थात ज्ञान। ज्ञान ही तो प्रकाश है, जिसके मिलने पर ही सद्गति संभव है। हे भक्तो अब जान लो... स्वयं क्षीरसागर शिव से आप घण्टी बजा-बजाकर शिव को जगाने का प्रयास करते रहे और खुद सोये रहे, अब शिव तुम्हें जगा रहा है। जागो अब सोने वाले भाग्य को खोने वाले बन जायेंगे अब आत्म जागृति का समय है। रात्रि जागकर, भांग आदि पीकर भोलेनाथ को रिझाते रहे। भांग पीने से नशा तो चढ़ गया, पर ईश्वरीय नशे या नारायणी नशे की अनुभूति तो नहीं हुई जिससे दुःख, तनाव, चिन्ताएं व व्यसन नष्ट हो जाते हैं। अब भोलानाथ सच्चा ईश्वरीय नशा चढ़ाकर जीवन को आलौकिक कर रहा है।** सच्ची शिवरात्रि तभी मनेगी जब हम प्यारे भोलानाथ शिव पिता द्वारा पिलाये गये ज्ञानामृत को पीकर, अपना जीवन श्रेष्ठ हीरे तुल्य बनायेंगे। समस्त विकृतियों को समाप्त करेंगे, अपने साधारण जीवन स्तर को श्रेष्ठ बनाकर धरती पर स्वर्ग का वायुमण्डल तैयार करेंगे।

**शुभखबरी** : परमात्मा शिव अपना दिव्य कार्य कर रहे हैं, अब उनका **ताण्डव नृत्य** भी प्रारम्भ होने ही वाला है। स्वयं शिव से सत्य ज्ञान प्राप्त कर मिलन के अधिकारी बन, मन का अंधकार दूर करें। **राजयोग** सीखकर दुःखदाई विकारों से मुक्त हों पूरे कल्प में केवल एक ही बार यह भाग्य मिलता है।

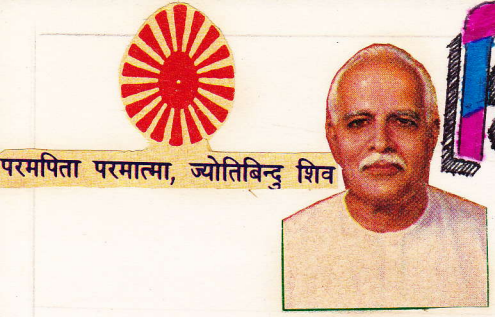

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव



# शिव भगवानुवाच

हे वत्सों पाँच महा तत्वों की उपासना से, बलि चढ़ाने से, देहदण्डन के योगो से मुझे तुम पा नहीं सकेंगे। जनन-मरण के चक्र में आनेवाले कोई भी देहधारी व्यक्ति परमात्मा नहीं है। मैं अजन्म, अयोनिज, जनन-मरण रहित, अहिंसक, अकाय, अव्यक्त चेतन्य, ज्योतिबिन्दु हूँ।

भारतीयों ने मुझ परमात्मा को "शिव" नाम से, पेरू देश में "शिवु" नाम से, बेबिलोनिया में 'शिवुन' नाम से, इजिप्त में 'सेव' नाम से, फिजी देश में 'सेवाजिया' नाम से मुहम्मदीयों ने मक्का में "संग-ए-अस्वद" (मक्केश्वर) के नाम से, ईसाइयों ने 'जहोवा' नाम से और जपानियों ने 'चिनकोनसेकी' आदि नामों से विश्व में मेरा उपासना करते हैं

## सर्व आत्माओं के एकैक पिता ज्योति लींगम शिव परमात्मा

ज्योतिर्लींगम चेतन्य शिव परमात्मा का रूप ही लिंग के रूप में संगमेश्वर में भक्त शिरोमणि बसवण्णा ने, रामेश्वर में राजा श्रीराम ने, गोपेश्वर में घनशाम श्रीकृष्ण ने उपासना की है। ज्योतिर्लिंगम शिवपरमात्मा को, परमात्मा के रूप में तपस्वी देवता शंकर ने, गुरुनानक ने एकओंकार, यसू ख्रिस्त ने गाड जेहोआ, मोहम्मद पगंबर ने अल्ला खुदा, महावीर ने अरहन्त, बुद्ध ने दिव्य ज्योती (DIVINE LIGHT) कहा है।

सर्व आत्मायें ज्योतिस्वरूप हैं। सर्व आत्म-ज्योतियों की भी ज्योति है। परमात्मा ज्योतियों से भी सर्व श्रेष्ठ ज्योति, परमात्मा है। शिव परमात्मा अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करनेवाले ज्ञानज्योति है। दिव्य अर्थात् स्वप्रकाश, परब्रह्म अर्थात् परंज्योति स्वरूप शिव परमात्मा चेतन्य है। स्वप्रकाशस्वरूप स्वयंभू परंज्योति होने के कारण परमात्मा ज्योतिर्लिंगाकार परमात्मा की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंग के मंदिरों में सोमनाथ (गुजरात), श्रीशैल में मल्लिकार्जुन (आन्ध्र प्रदेश)
सौराष्ट्र में महाकालेश्वर (मध्यप्रदेश), ओंकार में ममलेश्वर (मध्यप्रदेश)
उज्जयिनी में वैद्यनाथ (महाराष्ट्र), डाकिन्या में भीमेश्वर (महाराष्ट्र)
परली में रामेश्वर (तामिलनाडु), धारुकावन में नागेश्वर (गुजरात)
रामेश्वर में विश्वेश्वर (उत्तर प्रदेश), गौतमीतट में त्र्यम्बकेश्वर (महाराष्ट्र)
वाराणासी में केदारेश्वर (हिमाचल प्रदेश), शिलालय में घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र)
हिमालय में

**शिव भगवानुवाच :** भारत में भक्ति के आदिकाल में मुझ एक शिव परमात्मा को ही पूजते थे। बाद में पौराणिक देवतायें जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और शक्तियों को पूजने लगे फिर श्रीकृष्ण, श्रीराम जैसे भारत के पवित्र राजाओं तथा कालांतर में पंचतत्वों को (अग्नि, वृक्ष, जल) को फिर व्यक्ति पूजा, यहाँ तक कि समाधि आदि को भी पूजा करते हुए बहुदेवोपासक बन गये हो लेकिन अब ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा मेरा यथार्थ परिचय प्राप्त कर एकदेवोपासक बनो। मुक्ति व जीवनमुक्ति को प्राप्त करो।

**शिव भगवानुवाच :** मीठे बच्चे। मैं इस मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष का बीजरूप, सूरज, चांद सितारों से भी पार परमधाम निवासी हूँ। इस दुनिया में व्यापक नहीं हूँ। कलियुग के अंत और सतयुग के आरम्भ में अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग में सभी को मुक्ति और जीवनमुक्ति का वरदान देने अवतरित हुआ हूँ।

# शिवभगवानुवाच

**शिवभगवानुवाच :** "हे वत्सो ! मैं नाम और रूप से न्यारा या सर्वव्यापी नहीं हूँ बल्कि मेरा नाम 'शिव' है और मेरा अव्यक्त स्वरूप ज्योति-बिंदु है। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का भी रचयिता होने के कारण मैं 'त्रिमूर्ति' भी कहलाता हूँ। अब मैं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करके पुनः सच्चा गीता ज्ञान और सहज राजयोग सिखा रहा हूँ। अतः अब आप पूर्ण पवित्र बनो और राजयोगी बनो तो मैं आपको 21 जन्मों के लिए आने वाली दैवी सृष्टि (वैकुण्ठ : स्वर्ग) में राज्य और भाग्य का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार दूँगा।"

**शिवभगवानुवाच :** मैं ऐकैक परमात्मा परमज्योति स्वरूप, अजन्म, अयोनिज, अकाया, अव्यक्त, अभोक्त, अहिंसक, जन्म-मरण रहित हूँ। मुझे ठीक न जानने वाले मेरे भोले भक्त अपनी सिद्धि के लिए अपने इष्ट देवताओं की भक्ति, ध्यान करते हैं। मुझ परमपूज्य की भोले भक्तों को ठीक पहचान न होने कारण पूजारीयों के पूजारी बने हैं।

**शिवभगवानुवाच :** स्थूल गंगा से सिर्फ शरीर के मैले को धो सकते हैं। इसलिए स्थूल गंगा में स्नान करनेवाले कोई भी पावन नहीं बने हैं। मैं शिव परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो ज्ञान दे रहा हूँ उस ज्ञान-गंगा में स्नान करनेवाले आत्मायें ही पापों से मुक्त होकर, पुण्यात्मा और देवात्मा बनते हैं।

**सहज राजयोग :** देहसहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल आत्मस्वरूप में स्थित होकर बुद्धि में ज्योतिबिंदु परमात्मा शिव की स्नेहयुक्त स्मृति रखना ही वास्तविक योग है

**बहनों और भाइयो ! यह कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग है (कलियुग अंत और सतयुग आदि का संगम) जो एक ही बार आता है जब परमपिता परमात्मा शिव आकर सब की गति-सदगति करते हैं**

आत्मा निर्लेप नहीं है। आत्मा ही जैसे जैसे अच्छे वा बुरे कर्म करती है तो ऐसा ही फल पाती है। बुरे संस्कारों से पतित बन पड़ते है।

होवनहार विनाश के पहले बेहद के रूहानी बाप (शिव) को जानकर उनसे ही वर्सा लो।

शिवबाबा को याद करो तो पाप भस्म होंगे क्योंकि पतित पावन एक ही बाप है मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों गॉड-फादरली (बर्थराइट) जन्मसिद्ध अधिकार है

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

मुझ शिवपिता को और सुखधाम को याद करो तो पाप कट जायेंगे और फिर स्वर्ग में आ जायेंगे। जो जितना याद करेंगे उतना पाप कटेंगे